भगवद् गीता का ज्ञान – (13)

" ईश्वर प्राप्ति के चार साधन -- ध्यान-योग, ज्ञान-योग, कर्म-योग और भक्ति-योग "

श्रीमद्भगवद्गीता (श्रीमद् भगवद् गीता) के 13वें अध्याय के 24वें और 25वें श्लोकों में ईश्वर को प्राप्त करने (यानी संसार-सागर को पार करने) के ये चार साधन (तरीके) बताये गए हैं – पहला ध्यान-योग, दूसरा ज्ञान-योग, तीसरा कर्म-योग और चौथा भक्ति-योग या ईश्वर की भक्ति

ध्यानेनात्मनि पश्यन्ति केचिदात्मानमात्मना।
अन्ये सांख्येन योगेन कर्मयोगेन चापरे ॥१३:२४॥

अर्थात - "कितने ही मनुष्य सूक्ष्म बुद्धि से ध्यान के द्वारा (यानी ध्यान-योग के द्वारा), अन्य कितने ही लोग सांख्य-योग (ज्ञान-योग) के द्वारा और दूसरे लोग कर्म-योग के द्वारा (यानी निष्काम भाव से कर्त्तव्य-कर्म करते हुए) परमात्मा को प्राप्त (अनुभव) करते हैं।" **(गीता – 13:24)**

अन्ये त्वेवमजानन्तः श्रुत्वाऽन्येभ्य उपासते।
तेऽपि चातितरन्त्येव मृत्युं श्रुतिपरायणाः ॥१३:२५॥

अर्थात - "परन्तु अन्य लोग (जो ऊपर बताए गए तीनों साधनों, यानी ध्यान-योग, ज्ञान-योग और कर्म-योग, को नहीं जानते या जानने की सामर्थ्य नहीं रखते) दूसरों से (यानी परमात्म-तत्त्व को जानने वाले श्रेष्ठ मनुष्यों से) सुनकर ही ईश्वर की उपासना (भक्ति) करते हैं। ये सुनने के अनुसार आचरण करने वाले मनुष्य भी निःसन्देह मृत्यु-रूप संसार-सागर को तर जाते हैं।" **(गीता – 13:25)**